रहीम के काव्य में घर

डॉ॰ विभा कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
कल्याणी विश्वविद्यालय,
कल्याणी,नदिया,
पिन- 741235
पश्चिम बंगाल

सारांश

घर हमारे जीवन का एक अनिवार्य पहलू है। यह हमें अपनापन, आराम और सुरक्षा का एहसास देता है। यह वह स्थान है जहां हम परंपराएं और यादें बनाते हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती है। घर वह स्थान है, जहां हम अपने मूल्यों और संस्कृति को सीखते हैं। घर हमारी पहचान का प्रतिबिंब है। घर में रहकर ही हम जिम्मेदारी और जवाबदेही के बारे में सीखते हैं। घर का वातावरण हमारे सामाजिक और मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे हमें जीवन की कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति मिलती है। हर मनुष्य को अपने जीवन में एक घर की तलाश रहती है जहां वह सुख से अपना जीवन यापन कर सके। सुख का अर्थ है समभाव। जहां समभाव है वहां सुख है। रहीम का काव्य मनुष्य को इसी ओर प्रेरित करता है। मनुष्य है, तो घर है, घर है तो कविता है। इस धरती पर जब तक घर और मनुष्य का वजूद रहेगा तब तक रहीम का काव्य उनका मार्गदर्शन करता रहेगा।

मुख्य शब्द

घर, परिवार, अपसंस्कृति, वसुधैव कुटुंबकम, संयुक्त परिवार, अवमूल्यन, विश्वबंधुत्व, परिमार्जन, कालजयी, दायित्व-बोध, प्राथमिक, सार्वभौमिक, अतिवाद, समरसता, आत्मनियंत्रण, प्रजातांत्रिक मूल्य।

अध्ययन का उद्देश्य-

इस लेख को पढ़कर हम समझ सकेंगे कि घर किसे कहते हैं। मनुष्य के जीवन में घर का क्या महत्व होता है तथा एक सुंदर चरित्र को गढ़ने एवं समाज के निर्माण में घर की क्या भूमिका हो सकती है।

प्रस्तावना -

सामान्यतया विभिन्न सामग्रियों- मिट्टी, बालू, सीमेंट, पत्थर आदि से निर्मित रहने योग्य ढाँचे को 'घर' कहते हैं। पर सूक्ष्म रूप से केवल ऐसे ही रहने के स्थान को 'घर' कहते हैं, जहाँ पारिवारिक जीवन हो। परिवार के लोग मिल-जुल कर रहें। ऐसे ही घर में हम सांसारिक दुःख, चिंता तथा व्याकुलता से अपने आपको मुक्त पाते हैं, सुख-शांति का अनुभव करते हैं, क्योंकि इसमें अपनत्व की भावना प्रधान होती है। जीवन में सुखात्मक और दुखात्मक दोनों पहलू होते हैं परंतु आपसी सहयोग और सद्भाव दुःख को भी सुख में बदल देते हैं। परस्पर सहयोग से हम कर्मनिष्ठ होकर शारीरिक और मानसिक विकास करते हुए अपने लक्ष्य पर पहुँच जाते हैं। 'घर' वास्तव में परिवार के सदस्यों का आश्रयस्थल है, जहाँ उनके सर्वांगीण विकास के लिए उपयुक्त संरक्षण एवं सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। 'घर' वह स्थान है, जहाँ हम सुख के साथ पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हैं। सहयोग और सहानुभूति के साथ अपने व्यक्तित्व का विकास करते हुए अपने अधिकार, कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व का पूर्ण पालन करते हैं। हम घर में ही अपने रीति-रिवाज, अपनी संस्कृति का निर्वाह तथा अपने बच्चों का पालन-पोषण उचित रूप से स्वतंत्रता के साथ कर सकते हैं।

विषय-विस्तार

आज के आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के युग में जबकि सांस्कृतिक भिन्नताएँ और विरासत काफी दबाव में है, हमारे साहित्य पर यह दबाव और गहरा जाता है कि वह बढ़ती हुई अपसंस्कृति से हमारी रक्षा करे, हमारे मूल्यों का संरक्षण किया जाये। आज हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन में तनाव के कारण दिन-प्रतिदिन घुटन बढ़ती जा रही है। परिवार में छोटे, बड़ों का आदर नहीं करते, पति-पत्नी के संबंध तनावपूर्ण हैं। सामाजिक जीवन में सहयोग समाप्त होता जा रहा है। सामाजिक नियम और व्यवस्थाओं का उल्लंघन करते हम संकोच का अनुभव नहीं करते। गरीबों, असहायों का शोषण बढ़ रहा है। व्यक्ति स्वार्थवादी, अवसरवादी, भोगी और कर्तव्य-विमुख होता जा रहा है। मानवीय मूल्यों

का अवमूल्यन इसका प्रमुख कारण है। मूल्यों की गरिमा तो मनुष्यों द्वारा ही सुरक्षित रखी जाती है। इन्हीं मानव मूल्यों से परिवार सुरक्षित रहता है। परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्वबंधुत्व की परिकल्पना साकार होती है।

परिवार सबसे छोटी इकाई है और व्यक्ति उस परिवार का अनिवार्य सदस्य है। यदि इस छोटी इकाई में मूल्य का ह्रास प्रारंभ हो जाए तो क्या कुछ शेष रह जाएगा ? सवाल उठता है आखिर इन मूल्यों की उद्भावना और विकास कैसे किया जाए ? शिक्षा मनुष्य में मूल्य का विकास करती है। आदिम मूल प्रवृत्तियों को परिमार्जित करती है। शिक्षा वह परिवेश है जिससे विद्यार्थी रूपी बीज, जो अपने अंदर समस्त मूल्य का विकास समेटे हुए हैं, को खाद-पानी देकर उसे विकसित करने का अवसर प्रदान करती है। घर प्राथमिक पाठशाला है। इसलिए इसकी रक्षा मानव मूल्यों की रक्षा है। व्यवस्था घर की शोभा है। सदाचार घर की महक है। समाधान घर का सुख है। घर के बिना हम इस दुनिया पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते। रहीम के काव्य में उन मानवीय मूल्यों को खोजा जा सकता है, उस व्यवहार ज्ञान को उकेरा जा सकता है जिसके ऊपर हमारी नई पीढ़ी का भविष्य आधारित है। रहीम की रचना किसी एक युग की निर्धारित रचना नहीं है, बल्कि उनका काव्य कालजयी है। रहीम ने कई क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की और अपनी कीर्ति सदा के लिए स्थिर कर गए हैं। रहीम असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उन्हें संसार का बड़ा अनुभव प्राप्त था। यह बात उनके दोहों से स्पष्ट हो जाती है। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से जो कुछ भी कहा है, वह अनुभव के आधार पर कहा है। यह रहीम काव्य की बड़ी विशेषता है।

रहीम ने पारिवारिक मूल्यों का सूक्ष्म अंकन किया है। आज के एकल परिवार के बावजूद संयुक्त परिवार एक विशाल वट वृक्ष की भांति है जो अपनी जड़ों से अपनी छोटी शाखाओं को शक्ति और ऊर्जा प्रदान करता है। उसी प्रकार परिवार का मुखिया अपने स्नेह, प्रेम, आदर्श, दायित्व-बोध और कर्तव्य-पालन से बड़ी से बड़ी विपत्ति का मुकाबला कर अपने परिजनों की रक्षा करता है-

"आवत काज रहीम कहि, गाढ़े बंधु सनेह।

जीरन होत न पेड़ ज्यौं, यामे बरै बरेह।।"[1]

संयुक्त परिवार में सामान्य हितों पर अधिक बल दिया जाता है। सभी सदस्य एक-दूसरे के प्रति सभी प्रकार के कर्तव्यों को पूरा करने की शिक्षा पाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की भावनाओं और कार्यों से प्रभावित होता है, उसमें व्यक्तिवाद की भावना जन्म नहीं ले पाती है। सभी लोग स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को शारीरिक और भावात्मक सुख देना चाहते हैं। संयुक्त परिवार की मूल भावना ही समष्टि की भावना होती है। जिसके फलस्वरूप सभी में 'मैं' की भावना दब जाती है और 'हम' की भावना का स्वाभाविक रूप से विकास होता है।

संयुक्त परिवार की नींव सहनशीलता और त्याग पर रखी जाती है । व्यक्ति को अहं का त्याग करना पड़ता है, रूठों को एक बार नहीं, दो बार नहीं, सौ-सौ बार मनाना पड़ता है। रहीम का सामाजिक-व्यावहारिक ज्ञान उनके काव्य का राग- तत्त्व है। पारिवारिक लम्हों की तनातनी बड़े संघर्ष का रूप न ले, जीवन के खूबसूरत पल सामरस्य में ढ़लकर दायित्व-बोध को गुनगुनाने लगे, यही रहीम के दोहों का उद्देश्य है। यदि रूठों को मनाया नहीं, फटे हुए को सिला नहीं - के बिना गृहस्थी नहीं चलती। इसलिए रहीम अपने दोहों में टूटे को जोड़ने-मनाने की बात करते हैं-

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार।

रहिमन फिरि-फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार।।[2]

मानव समाज विकसित होकर वर्तमान वैज्ञानिक युग में पहुंच चुका है। पाश्चात्य देशों के लोग वैज्ञानिक प्रगति के शिखर पर पहुंच कर मुस्कुरा रहे हैं, सभी पुरानी चीजों का स्थान नई चीज ले रही है, लेकिन परिवार के औचित्य को अभी तक चैलेंज नहीं किया जा सका है। यह सत्य है कि परिवार के रूप में कुछ परिवर्तन हुए हैं। इसके अनेक कार्य दूसरी-दूसरी समितियों द्वारा पूरे किए जा रहें हैं, लेकिन ऐसे अनेक महत्वपूर्ण कार्य भी हैं, जिन्हें परिवार ही स्वाभाविक, निश्चित और निर्भय होकर संपादित कर पाते हैं। इसका स्थान अभी तक कोई दूसरा संगठन नहीं ले सका है। यही कारण है कि घर परिवार का महत्व

आज भी सभी सभ्य और असभ्य समाजों में समान रूप से कायम है। इस रूप में घर मनुष्य का एक स्वाभाविक अनिवार्य संघ है।

घर किसी भी मनुष्य की प्राथमिक पाठशाला है। बच्चों के समाजीकरण की प्रक्रिया घर से ही शुरू होती है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा ही घर एक जैविक प्राणी को सामाजिक प्राणी के रूप में बदल देता है। सामाजिक प्राणी के रूप में बदलने का तात्पर्य उसे समाज के अनुरूप व्यवहार करना सिखाना है। जैसे बड़ों को प्रणाम करना, उनका सम्मान करना, छोटों को प्यार करना, अपनी संस्कृति, प्रथा, परंपराओं को जानना और निर्वाह करना आदि। इस सीख के अभाव में मनुष्य व्यक्ति नहीं बल्कि एक पशु के समान होगा जो पहले परिवार और फिर समाज के अस्तित्व को खतरे में डाल सकता है। इस अर्थ में परिवार बच्चे का समाजीकरण करके महत्वपूर्ण कार्य करता है।

परिवार में पुत्र की तुलना रहीम ने दीपक से की है क्योंकि यदि वह सपूत है तो परिवार की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाते देर ना लगेगी और अगर कपूत हुआ तो-

"जो रहीम गति दीप की कुल कपूत गति सोय,
बारे उजियारे लगे, बढ़े अंधेरो होय।।"[3]

बच्चों के समुचित और सार्वभौमिक विकास में स्नेह, प्रेम और सुरक्षा के साथ-साथ अनुशासन की शिक्षा भी एक आवश्यक अंशदायी तत्व है। बहुत से अभिभावक इस बात को समझ नहीं पाते हैं कि बच्चों के विकास में अनुशासन के विकास के आदर्शों की संप्राप्ति किस प्रकार संभव है। अनुशासन की शिक्षा उचित तथा अनुकूल समय पर, अनुशासित ढंग से ही नियम पूर्वक दी जाए, तभी उसका परिणाम स्थायी होता है। और यह कार्य घर से ही शुरू होता है। घर के बड़े-बुजुर्ग बचपन से ही बच्चों को अनुशासन की शिक्षा दे सकते हैं। विधिपूर्वक तथा उचित ढंग से सिखाया हुआ अनुशासन एक सुदृढ़ नियम की तरह कार्य करता है। जिस पर समस्त जीवन को स्थायी आधार मिलता है। बच्चों के चरित्र को गढ़ने में घर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रहीम उत्तम प्रकृति वाले मनुष्य की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं। जिसकी प्रकृति उत्तम होती है, चरित्र दृढ़ होता है, वहाँ कुसंग का प्रभाव भी व्यर्थ चला जाता है। रहीम का बहुत प्रसिद्ध दोहा है-

"जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।"[4]

घर में रहकर ही व्यक्ति आत्म नियंत्रण की प्रवृत्ति को सीखता है। लोक-व्यवहार में यही देखने को मिलता है कि वही व्यक्ति विकास की मंजिल की ओर जा सकता है जो अपने तन-मन को अपने नियंत्रण में रखने की क्षमता रखता है तथा अतिवादी प्रवृत्तियों से हमेशा अपने आप को बचाकर रखने की कोशिश करता है। इसलिए रहीम कहते हैं -

"जौ रहीम मन हाथ है, तो तन कहूं किन जाहिं।
ज्यों जल में छाया परे, काया भीजत नाहिं"।।[5]

घर में रहकर ही व्यक्ति सीखता है कि अतिवाद से हमेशा बचते हुए अपनी मर्यादा के अनुरूप कार्य करना चाहिए। रहीम की स्पष्ट सीख यह है कि-

रहिमान अति न कीजिए, गहि रहिए निज कानि।
सैंजन अति फूलै तऊ, डार-पात की हानि।।"[6]

आज के भौतिक युग में चारित्रिक सद्गुण तथा आत्म नियंत्रण की प्रवृत्ति का ह्रास होता जा रहा है। भोगवादी पश्चिमी सभ्यता के प्रभावस्वरूप मानव-मूल्यों का विघटन तेजी से होता जा रहा है। आज के भोगवादी अर्थ-प्रधान सभ्यता के कारण ही नैतिक मूल्यों का पालन नहीं हो पा रहा है। सत्य की जगह मिथ्या भाषण, कपट, व्यवहार, झूठ, चापलूसी, हिंसा, लूट, बलात्कार, संग्रहखोरी, सरकारी कार्यालय में कामचोरी, कर-चोरी, भ्रष्टाचार, वोट-संग्रह की राजनीति, प्रजातांत्रिक मूल्यों का पतन, आर्थिक विषमता, बेकारी, भाई भतीजावाद, जीवन में असंतोष, लोगों की निंदा-बुराई आदि के कारण भारत का वातावरण दिन-प्रतिदिन खराब होता जा रहा है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रासोन्मुखी भारतीय परिवेश का चित्र रहीम के दोहों में दिखाई पड़ता है-

"दोनों रहिमन एक से, जौ लौं बोलत नाहिं।
जान परत है काक पिक, ऋतु बसंत के माहिं।।"[7]
"आप ना काहू काम के, डार-पात फल मूल।
औरन को रोकत फिरे, रहिमन क्रूर बबूल।।"[8]
"रहिमन अब वे बिरिछ कहँ, जिनकी छाँह गंभीर।
बागन बिच-बिच देखियत, सेहुँड़, कुंज, करीर।।"[9]

परिवार से यह आशा की जाती है कि वह बालकों के व्यवहार को इस प्रकार उचित प्रशिक्षण दे कि वे किसी प्रकार के मानसिक तनाव या रोग से ग्रसित न हो पायें। अपनी परिस्थितियों के साथ उचित संयोजन कर सकें तथा अपराधी न बनें। यह परिवार के सदस्यों पर निर्भर करता है कि वे इस प्रकार का प्रशिक्षण अपने व्यवहार तथा पारिवारिक संबंधों के माध्यम से दें। परिवार बालकों को किस प्रकार तथा कैसी शिक्षा देता है, इस बात पर बालकों का व्यावहारिक तथा संवेगात्मक विकास निर्भर होता है तथा बालकों का जैसा व्यावहारिक और संवेगात्मक विकास होगा उसी के अनुरूप समाज और राष्ट्र का विकास होगा क्योंकि आज का बालक ही तो भविष्य का राष्ट्र निर्माता होता है।

घर परिवार के साथ बच्चे का जन्म से ही घनिष्ठ संबंध होता है। यह संबंध लंबे समय तक अर्थात जन्म से किशोरावस्था एवं प्रौढ़ावस्था तक तथा कभी-कभी वृद्धावस्था तक बना रहता है। इसलिए परिवार बालक के व्यवहारों को एक निश्चित दिशा प्रदान करने का सशक्त साधन है। बच्चों के जन्म के समय यह नहीं कहा जा सकता कि वह बालक बाल अपराधी बनेगा या समाज का एक उपयोगी सदस्य सिद्ध होगा, यह तो परिवार तथा वातावरण उसे बना देता है।

घर का अर्थ है मनुष्य। मनुष्य के आपसी प्रेम और विश्वास पर घर की आधारशिला टिकी हुई है। घर मनुष्यता का एक दिल ही है और रहीम इस सौंदर्य भावना को मनुष्य संस्कृति का आदि तत्व बनाना चाहते हैं। प्रेम का चहुँमुखी धार पथ यहीं से खुलता है। वह लौकिक हो अथवा अलौकिक, बहुत ही दुर्गम है यह मार्ग। इसलिए वे कहते हैं-

"प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाहिं"[10]

इसलिए इस मार्ग से थोड़ा भी डिगा तो उसे पुनः संभलने का मौका नहीं मिलता-

"रहिमन मारग प्रेम को, मत मतिहीन मझाव।
जो डिगि है तो फिर कहूं, नहिं धरने को पाव।।"[11]

प्रेम यदि है तो घर है। यह प्रेम ही है जो घर के प्रत्येक सदस्य को एकता के सूत्र में बांधे रखता है। इसलिए तो रहीम ने लिखा है-

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिलै गांठ परि जाय।।"[12]
"रहिमन प्रीति सराहिए मिले होत रंग दून।
ज्यों हरदी जरदी तजै तजै सेफदी चून।।"[13]

बिना प्रेम के संसार निस्सार है। जिस प्रेम में गहराई न हो, भला वह कहीं प्रेम है। परिवार में समरसता के लिए स्नेह ही तो वह निधि है जो हमें आपस में एक साथ बांधे रखती है। इस प्रेम के कारण ही तो हम वसुधैव कुटुंबकम की बात करते हैं जो भारतीय संस्कृति की रीढ़ है।

निष्कर्ष

इस प्रकार, घर जीवन मूल्यों का प्रतीक है। उसे बचाना प्रकारांतर से मूल्यों को बचाना है। साहित्य जब घर को बचाने की चिंता में लिखा जाता है तब हमारे समाज के मूल्य भी जीवित होते हैं। मूल्य की स्वायत्त दुनिया से घर, समाज, राष्ट्र और साहित्य का भला नहीं होता है। जीवन में मूल्यों की व्यवस्था को बचाने का संकल्प साहित्य के द्वारा ही संभव होता है। मूल्यों की सत्ता घर, समाज और साहित्य से निर्मित होती है। इसमें से किसी की उपेक्षा करके संवेदना को, स्मृति को, परंपरा को, विरासत को, मूल्य को, घर को, समाज को, संस्कृति को, जीवन को तथा साहित्य को नहीं बचाया जा सकता। एक कठिन समय में साहित्य जब घर, समाज की अपनी नजदीकी दुनिया की बात करेगा, तब साहित्य को समाज अपने घर में मूल्य व्यवस्था में जीवित रखेगा। फिर वह साहित्य को घर से कैसे निकाल पाएगा ? यदि समाज में मूल्य की कुछ प्रतिभूति शेष है, तो वह साहित्य में ही है। आज पहली जरूरत है साहित्य में घर को बचाने की। घर-समाज जीवन के सघन रिश्ते से साहित्य और समाज का जीवंत संवाद बन पाएगा। घर-साहित्य-मूल्य सभी का संवाद इस दुनिया को रचनात्मक संभावनाएं देगा। रहीम काव्य के इस मर्म को हर युग में समझना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

---

[1] सं. मिश्र विद्यानिवास, रजनीश गोविंद, 'रहीम ग्रंथावली', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण:1985, पृष्ठ: 78

[2] वही, पृष्ठ: 86

[3] वही, पृष्ठ: 86

[4] वही, पृष्ठ: 74

[5] वही, पृष्ठ: 80

[6] वही, पृष्ठ: 176

[7] वही, पृष्ठ: 145

[8] संपादक- याज्ञिक मायाशंकर, 'रहीम रत्नावली', साहित्य-सेवा सदन, वाराणसी, संस्करण: 1928, पृष्ठ: 2

[9] संपादक- मिश्र सत्यप्रकाश, 'रहीम रचनावली', लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण: 2004, पृष्ठ: 168

[10] सं. मिश्र विद्यानिवास, रजनीश गोविंद, 'रहीम ग्रंथावली', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण:1985, पृष्ठ: 84

[11] वही, पृष्ठ: 79

[12] वही, पृष्ठ: 80

[13] वही, पृष्ठ: 80